HISTORY

B.A.PART-I (Hons)

Paper-II (The Rise of Modern west)

Unit-II, (Capitalism at The Beginning of Modern Age)

Dr. GUDDY KUMARI

(Guest Lecturer), History Deptt.

A.N.D. College, Samastipur

Lecture Series - 77

"आधुनिक युग के आरम्भ में पूँजीवाद"

(CAPITALISM AT THE BEGINNING OF THE MODERN AGE)

यूरोप की आर्थिक व्यवस्था पर पुनर्जागरण और भौगोलिक अनुसन्धानों का गहरा प्रभाव पड़ा जिसने यूरोप के आर्थिक जीवन को परिवर्तित कर दिया। आरम्भ में पूँजी निर्माण के द्वारा सबसे बड़ा परिवर्तन हुआ। इस नवीन युग को पूँजीवाद का युग कहा गया। उपनिवेशों ने इस पूँजीवाद के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया। एशिया, अफ्रीका, अमेरिका में यूरोप के उपनिवेश थे जिनसे विशाल मात्रा में पूँजी प्राप्त हो रही थी।

Dr Guddy Kumari (A.N.D College)

विशाल प्राकृतिक साधन उपनिवेशों में उपलब्ध थे। यह पूँजी विभिन्न उपायों; जैसे- सैनिक शक्ति से लूटकर, असमान व्यापार थोपकर, भारी कर लगाकर प्राप्त की गई थी। यूरोप के लोगों ने इस पूँजी के उत्पादन के लिये दास पद्धति का विकास किया। अमेरिका में विशेष रूप से इस अमानवीय पद्धति और इसके अपरिमित अत्याचारों से पूँजी का उत्पादन किया गया। इंग्लैण्ड, फ्रांस, इटली, हॉलैण्ड और जर्मनी में पूँजीवाद का उत्थान विशेष रूप से हुआ।

कृषि प्रणाली पर पूँजीवाद के उत्थान का गहरा प्रभाव पड़ा। नगरों में अनेक सामन्त आकर रहने लगे और उन्होंने विभिन्न व्यापारिक कार्यों में भाग लिया। उन्हें पूँजी की आवश्यकता थी, अत: अब वे किसानों से नकद लगान लेने लगे। लगान वसूल करने के लिये उन्होंने नौकर रखे और अधिक से अधिक लगान वसूल करने का प्रयत्न किया। इस प्रकार कृषि की स्थिति में परिवर्तन हुआ। ग्रामीण क्षेत्रों में भूमिहीन किसानों की संख्या बढ़ गयी और कृषकों की दशा अत्यन्त दयनीय हो गई। नगरों में अनेक भूमिहीन कृषक आ गये जो श्रमिक बन गये। ऊन के व्यापार से कृषि से अधिक लाभ होता था। इसलिये कृषि के

Dr Guddy Kumari (A.N.D College)

स्थान पर चरागाह बनाये गये जिनमें भेड़ें पाली जाती थीं। इंग्लैण्ड में यह सबसे अधिक हुआ।

उद्योगों पर भी पूँजीवाद का प्रभाव पड़ा। इससे नगरों में श्रेणी प्रणाली का अन्त होने लगा। अब उत्पादन के क्षेत्र में श्रेणी के स्थान पर पूँजीवादी मध्यस्थ का आगमन हुआ। यह पूँजीवादी मध्यस्थ कच्चा माल खरीदकर श्रमिकों से माल बनवाकर बाजार में बेचता था। इस परिवर्तन से उत्पादन तथा बाजार के क्षेत्र का विस्तार हुआ। मजदूरी कम से कम रखने के लिये भूमिहीन कृषकों तथा महिलाओं का प्रयोग उत्पादन में किया गया व्यापारी अब बड़ी संख्या में अपना माल गोदामों में रखकर लाभ कमाने के लिये सुदूर क्षेत्रों में बेचते थे।

धन्यवाद

Dr Guddy Kumari (A.N.D College)